Western Philosophy -Descartes

PROOFS FOR THE EXISTENCE OF GOD

ईश्वर की सत्ता के प्रमाण

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

आधुनिक बुद्धिवादी दार्शनिकों में डेकार्ट को आधुनिक दर्शन का जन्मदाता माना गया है । इन्होंने परंपरागत दर्शन में समाविष्ट उलझनपूर्ण गूथियों को नए सिरे से सुलझा कर दर्शन की नींव डालने का प्रयास किया है।

दार्शनिक जगत में ईश्वर की समस्या प्रमाणित करना एक मुख्य विषय रहा है। इस मत को लेकर दार्शनिकों में पूरा मतभेद रहा है। परंतु गणितज्ञ डेकार्ट ने गणित का सहारा लेकर स्वयंसिद्ध सिद्धांतों की खोज की जिसके आधार पर यह बतलाया कि आत्मा की सत्ता स्वयं सिद्ध है। स्वयं सिद्ध सिद्धांत के आधार पर उन्होंने ज्ञान की कसौटी प्रदान की और इसी कसौटी के आधार पर ईश्वर और सत्य निष्ठा को सिद्ध किया ।

व्युत्पत्ति के दृष्टिकोण से डेकार्ट ने संपूर्ण प्रत्यय को तीन भागों में बांटा है -जन्मजात प्रत्यय ,भाषा प्रत्यय और काल्पनिक प्रत्यय ।जन्मजात प्रत्यय के स्वरूप को इस प्रकार दर्शाया गया है कि वह जन्म से ही मानव के मस्तिष्क में विद्यमान रहती है ।बाह्य प्रत्यय वह है जिसे बाहर से प्राप्त किया जाता है और काल्पनिक प्रत्यय वह है जो कल्पना से उत्पन्न होते हैं ।

उपर्युक्त विभाजन में से जन्मजात प्रत्यय को ही डेकार्ट ने प्रमुख प्रत्यय बतलाया है और सभी जन्मजात प्रत्यय में वह एक ऐसे प्रत्यय की कल्पना करता है जो अधिक महत्वपूर्ण है ।डेकार्ट के ऐसे महत्वपूर्ण जन्मजात प्रत्यय का संबंध ऐसे सत्ता से है जो शाश्वत, पूर्ण ज्ञानी एवं सर्वव्यापी है। इस सत्ता को सभी सत्ताओं का मूल कहा है पर अब प्रश्न है कि इन प्रत्ययों की व्याख्या किस प्रकार की जाए ? यदि पूर्ण सत्ता का प्रत्यय हमारे अंदर है तो निश्चित रूप से इस प्रत्यय का कारण कोई पूर्ण सत्ता होगी और वह पूर्ण सत्ता और कोई नहीं बल्कि ईश्वर है।

डेकार्ट ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए जिन तर्कों का सहारा लिया है वे परंपरागत तर्क ही हैं, जिसे लगभग सभी ईश्वरवादी दर्शनिकों ने अपनाया है।वे तर्क या प्रमाण निम्न प्रकार से हैं : -

1 कारणता सम्बन्धी प्रमाण (Causal Argument)

2 विश्व सम्बन्धी प्रमाण (Cosmological Argument)
3 तात्त्विक प्रमाण (Ontological Argument)

1 कारणता सम्बन्धी प्रमाण - कार्य करण का सिद्धांत यह बतलाता है कि प्रत्येक कार्य का कुछ ना कुछ कारण होते हैं (Every event must have a cause) ।असत्त से सत्त की उत्त्पत्ति नहीं होती।कारण -कार्य सिद्धांत यह भी बतलाता है कि कार्य के बराबर कारण होता है। अपने कार्य कारण सिद्धांत के द्वारा डेकार्ट ने ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया है।

डेकार्ट का कहना है कि ईश्वर के प्रत्यय का मैंने स्वयं रचना नहीं किया कारण यह है कि मैं स्वयं अपूर्ण हूं जबकि ईश्वर का प्रत्यय पूर्णा है। अतः स्पष्ट है कि इसका कारण अपूर्ण सत्ता नहीं हो सकता इसका कारण ईश्वर के प्रत्यय जैसा ही कोई पूर्ण सत्ता होगा और यहां समझना चाहिए की परम सत्ता होने के कारण ही हमें उसने उत्पन्न किया है ।अतः डेकार्ट ने ईश्वर को परम सत्ता के रूप में स्वीकार कर उसे वास्तविक माना है और उसे विश्व का कारण माना है ।इस प्रकार डेकार्ट का कारणता प्रमाण ईश्वर के अस्तित्व को संसार के कारण के रूप में दर्शाता है।यह सम्पूर्ण सृष्टि परिमित है, जड़ है, ससीम है और कार्य रूप है।जड़ तत्त्व सृष्टि नहीं कर सकता, वह उपादान कारण बन सकता है।सृष्टि बिना चेतन तत्त्व नहीं हो सकती। अतः सृष्टि का चेतन निमित्त कारण ईश्वर है। **2 विश्व सम्बन्धी प्रमाण -** ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए डेकार्ट ने विश्व संबंधी प्रमाण भी पेश किए हैं ।इस सिद्धांत के अनुसार हमें यह जानना कि किसने मेरे माता पिता की तथा संसार की अन्य वस्तुओं की स्थापना की है ।डेकार्ट का कहना है कि मैं अपना सृजनहार स्वयं नहीं हो सकता क्योंकि मैं यदि अपने को बनाता तो पूर्ण बनाता क्योंकि हम में पूर्णता की भावना है ,फिर यदि यह भी माना जाय कि मेरे माता-पिता मेरे उत्पति के कारण हैं तो वे भी सान्त और अपूर्ण नहीं बनाते।जैसा कि डेकार्टने कहा है कि यदि मैं यह मान भी लूँ की मेरी उत्पत्ति का कारण मेरे माता पिता हैं तो उनके उत्पत्ति के कारण उनके माता पिता होंगें फिर उनके उत्पत्ति के कारण भी होंगे।इस तरह समस्या का समाधान के बदले यह दोषपूर्ण हो जायेगा जिसे अनवस्था दोष(Infinite Regress)कहा जाता है।यदि यह मान भी लिया जाय कि अपना सृष्टि मैंने स्वयम किया है तो मुझे अपने सृष्टि के पहले होना होगा।फिर हम अनवस्था दोष के शिकार होंगे।अतः डेकार्ट इसे अमान्य बतलाते हैं और किसी ने अपनी सृष्टि नहीं की है ,इस बात को वे मानते हैं ।परंतु ऐसा मान लिया जाए कि हमारी सृष्टि हमारे मां-बाप ने किया है इसे भी वह ठीक नहीं है,हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि हमारे माता पिता हमारे पूर्ण जीवन का संरक्षण नहीं कर सकते और फिर प्रश्न किया जा सकता है कि हमें किसने पैदा किया यदि माता-पिता को अपना जन्मदाता माना जाए तो विश्व संबंधी समस्या एक पग पीछे हट जाता है परंतु इससे

इस समस्या का समाधान नहीं होता है ।डेकार्ट के अनुसार माता-पिता तथा अन्य समस्या का समाधान बिना अवस्था दोष के करना चाहे या तो यह मानना पड़ेगा कि एक पूर्ण ईश्वर है जिसने विश्व के सभी चीजों की स्थापना की है ।अतः डेकार्ट ने विश्व संबंधी प्रमाण के सहारे ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने की कोशिश की है ।

3 तात्त्विक प्रमाण - ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए उपर्युक्त जीतने प्रमाण दिये गए हैं उनसे कहीं अधिक महत्व तात्विक प्रमाण का है।Ontology शब्द ontologus से बना है जिसका अर्थ होता है-The science of being or the science of reality ।

डेकार्ट के अनुसार विचार(Thought) और उसके अनुरूप अस्तित्व में अभिन्न सम्बन्ध है।पूर्ण सत्ता अस्तित्व पूर्ण सत्ता के भावना से सिद्ध होता है। इसे उदाहरण के द्वारा समझाते हुए डेकार्ट ने कहा है कि जिस प्रकार त्रिभुज की परिभाषा स्वीकार कर लेने पर यह मान लेते हैं कि इसके तीनों कोण मिलकर दो समकोण के बराबर होते हैं उसी प्रकार पूर्ण सत्ता की भावना को मानने पर हमें यह मान लेना पड़ता है कि पूर्ण सत्ता वास्तविक है । अतः पूर्ण सत्ता का अस्तित्व उसकी भावना से अनिवार्य रूप में सिद्ध होती है ।डेकार्ट का कहना है कि यह ठीक है कि प्रत्यय और सीमित पदार्थ में अभिन्न संबंध नहीं है क्योंकि बिना वास्तविकता के द्वारा हम पंख वाले घोड़े के विषय में सोच भी नहीं सकते लेकिन पूर्ण सत्ता की भावना के बिना पूर्ण सत्ता के अस्तित्व को माने बिना सोचा भी नहीं जा सकता। अतः पूर्ण सत्ता की भावना ही पूर्ण सत्ता के अस्तित्व को सिद्ध करती है।

कुछ लोगों ने डेकार्ट के तात्त्विक प्रमाण को उनके पूर्ववर्ती दार्शनिक अनसेलम के सिद्धांत का नकल कहां है डेकार्ट ने इसकी उत्तर देने के क्रम में अनसेलम और अपने उक्ति में विभेद करता है अनसेलम के अनुसार यह सर्वमान्य है कि ईश्वर की भावना सभी प्रत्ययों में सर्बोच है, अब वह केवल जो विचार में सत्य है उससे उच्चतर वह है जो विचार और यथार्थ दोनों में सत्य है। ईश्वर सर्वोच्च होने के कारण विचारों और यथार्थ दोनों में सत्य है इसलिए यथार्थ में वह सत्य है ।डेकार्ट ने कहा ईश्वर इसलिए है कि हमें उसकी भावना है परंतु हमें ईश्वर की भावना इसलिए है कि वह वास्तविक सत्यता है। डेकार्ट ईश्वर की वास्तविकता को सर्वोच्च प्रत्यय पर आधारित कर देता है और ईश्वर के भाव या अस्तित्व पर ईश्वर की भावना निर्भर करती है ।हमें उसकी भावना इसलिए कि वह वास्तविक सत्यता है। जिस किसी वस्तु के तत्व या सार रूप को हम स्पष्टताया या परीअस्पष्टताया देखते हैं कि वह उस वस्तु में है तो हम उस वस्तु के प्रति उस तत्व तथा परीस्पष्ट रूप होने को मान लेते हैं। अब हम स्पष्ट तथा परीस्पष्ट रूप से जानते हैं इसलिए उचित रीति से हम ईश्वर के अस्तित्व को मान लेते हैं ।

डेकार्ट के द्वारा दिए गए तात्विक प्रमाण की आलोचना काँट करते हैं और इस क्रम

में वह बतलाते हैं कि प्रत्यय और विचार में बहुत अंतर होता है किसी प्रत्यय के आधार पर किसी वस्तु की वास्तविकता सिद्ध नहीं होती उदाहरण स्वरूप मैं सोचता हूं कि मेरे पास जेब में ₹100 है किंतु ₹100 के विचार से केवल यह सिद्ध नहीं हो जाता कि वास्तविक रूप में मेरे जेब में ₹100 है अतः पूर्ण सत्ता की भावना रहने से पूर्ण सत्ता का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता।

कांट के उपर्युक्त आलोचना के विरुद्ध कुछ दार्शनिकों ने डेकार्ट के मत की पुष्टि की है और उनका कहना है कि कांट की आलोचना मात्र साधारण वस्तुओं पर लागू होता है किंतु पूर्ण सत्ता के संबंध में काँट की आलोचना को उन्होंने गलत बतलाया है क्योंकि भावना या विचारपूर्ण सत्ता(Finite Beings) के साथ अभिन्न रूप से मिले रहते हैं और हमेशा भावना के द्वारा वास्तविकता सिद्ध होती रहती है ।

अंत में या कहा जा सकता है कि ईश्वर का अस्तित्व है ईश्वर सत्य निष्ठ है और ईश्वर की सत्य निष्ठा पर स्पष्टता तथा परीअस्पृश्यता की कसौटी आधारित है और इसी प्रकार की ज्ञान की कसौटी से सभी प्रकार के ज्ञान की स्थापना होती है ।अतः ईश्वर का दर्शन ईश्वर की सत्यनिष्ठा पर आधारित है होने के कारण निर्विवाद रूप से ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित करता है ।